ओ३म्
AUM
वेदाङ्ग
(KNOWLEDGE FROM THE VEDAS)
आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी - प्रचार कमीटी
Arya Pratinidhi Sabha Fiji
P.O. Box 4245, Samabula
JULY, SEPTEMBER ISSUE 1998
NO. 18

संस्कार

पिछले अंक से आगे

कर्णवेध संस्कार

कर्णवेध संस्कार नवा संस्कार है। कर्णवेध का अर्थ है दोनों कानों में छेद कर देना। यह संस्कार बालक तथा बालिका दोनों के लिए है। बच्चे का कान छेदने का समय जन्म से तीसरे या पांचवें वर्ष का उचित है। कान छेदने के दो कारण है। पहला कारण है बच्चे की रोग से रक्षा, दूसरा कारण है बच्चे के कान में गहना डाल देना।

कान छेदने की विधि

जिस दिन कान छेदने के लिए ठहराया हो, उसी दिन बच्चे को सुबह, शुद्ध जल से स्नान करा और वस्त्र धारण करा के बच्चे की माता यज्ञ वेदी पर लावे। माता-पिता सम्पूर्ण विशेष यज्ञ को करें। उस के बाद बच्चे के आगे कुछ खाने का पदार्थ वा खिलौना धरके कान छेदने की क्रिया को करे।

वैद्य (जो कानों में छिद्र करेगा) अपने बायें हाथ से कान को खींच कर देखे, जहां सूर्य की किरणें चमकें वहां देवकृत-छिद्र में धीरे-धीरे सीधे छेद करे। इसे "देवकृत" -छिद्र इसलिए कहा गया है क्योंकि कान के जिस स्थान में सूर्य की किरण चमके, वह-पतला स्थान देव का अर्थात् परमात्मा द्वारा ही किया गया है। याद रहे उसी व्यक्ति से कानों को छिदवावें जो नाड़ियों के बारे में जानता हो।

संस्कार विधि में दिये गये दो मन्त्रों से कानों में छिद्र करें। प्रथम मन्त्र से दहिना कान तथा दूसरे मन्त्र से बायां कान में छिद्र करें। तत्पश्चात् वही वैद्य उन छिद्रों में शलाका (सीक) रक्खे, कि जिससे छिद्र बन्द न हो जावे। अगर चाहे तो उसी समय सोने आदि के आभूषण डाल सकते है और ऐसी दवा उस पर लगावे, जिससे कान पके नहीं और जल्दी अच्छे हो जावे।

उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत संस्कार)

वैदिक संस्कृति का एक मुख्य चिन्ह यज्ञोपवीत अथवा जनेऊ है। आज हम इस परम पवित्र चिन्ह को भूल गए हैं।

यज्ञोपवीत का अर्थ है यज्ञ के लिए, वेद में बताये हुए कर्म में अधिकारी बनने के लिए जो कन्धे के ऊपर डाला जाये। इसे ब्रह्म सूत्र भी कहते है। ब्रह्म का अर्थ है वेद, ज्ञान अथवा ईश्वर। ईश्वर वा ज्ञान पाने के लिए यह सूत्र, डोरा वा तागा धारण किया जाता है।

उपनयन संस्कार दसवां संस्कार है। यह संस्कार इसलिए किया जाता है कि अब इसके बाद बालक या बालिका वेद का अध्ययन आरम्भ करेगे, वेद के अध्ययन का मतलब आजकल है, शिक्षा का प्रारम्भ करना। उपनयन संस्कार शिक्षा के मन्दिर में प्रवेश करने का द्वार है, इस द्वार में प्रविष्ट होकर विद्या का जो अध्ययन किया जाता है वह वेद आरम्भ-संस्कार कहाता है।

यज्ञोपवीत का महत्व

यज्ञोपवीत में तीन सूत्र होते है जो तीन ऋणों (कर्जों) के सूचक है अर्थात्, मनुष्य के पैदा होते ही उस पर तीन ऋणों का भार पड़ जाता है, जिन्हें चुकाना उसका कर्त्तव्य है। वे तीन ऋण हैं - (क) ऋषिऋण (ख) पितृऋण (ग) देवऋण।

(१) ऋषि-ऋण - समाज में ऋषि लोगों ने ज्ञान-विज्ञान का परिचय प्राप्त कर, हमें ज्ञान दिया। अगर उनके पास ज्ञान न होता, तो हम निरे मूर्ख-के-मूर्ख रह जाते है। जैसे उन लोगों ने ज्ञान प्राप्त कर उस ज्ञान को हम तक पहुंचाया, वैसे हम भी ज्ञान प्राप्त कर समाज में आगे-आगे ज्ञान गङ्गा के बहते रहने का प्रबन्ध करें। इस बात को यज्ञोपवीत का एक सूत्र हमें याद दिलाता है।

(२) पितृऋण - हमारे माता-पिता ने ब्रह्मचर्य आश्रम समाप्त कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया और हमें उत्पन्न किया। अगर वे गृहस्थ आश्रम में प्रवेश न करते, तब हमारा जन्म कैसे होता। इसी प्रकार हम ब्रह्मचर्य आश्रम को समाप्त कर युवा अवस्था में गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर समाज को उत्तम सन्तान प्रदान करें जिससे समाज का पिता में पुत्र, पुत्र से प्रपौत्र-इस प्रकार का सिलसिला बधा रहे। जब हम ब्रह्मचर्य

माता-पिता द्वारा हम पर किये गये उपकार को याद करते हैं। जब हम देखते है कि अपने ही बच्चों के लालन-पालन में कितना त्याग करना पड़ता है, कितने सकटों का सामना करना पड़ता है तब हम याद करते है कि हमारे माता-पिता ने भी हमारे लिये कितने त्याग किये होंगे। यह हमें यही याद दिलाता है कि हमें माता-पिता की सेवा करके उस कर्ज से छुटकारा पाना है।

यज्ञोपवीत का दूसरा सूत्र यही याद दिलाता है।

(३) देव ऋण- हम संसार के काम-धंधों में इतने फंसे रहते हैं कि उनका मोह हमें बांधे रखता है। अन्त में सब मोह-माया छूट जाएगा। इसलिए गृहस्थ आश्रम से जब छुटकारा मिल जाये अर्थात सन्तानों को पढ़ा-लिखाकर विवाह आदि करने के बाद गृहस्थियों को समाज के भले, उसकी सेवा के लिये वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करें, गृहस्थ में ही न धंसे रहें, इस बात को याद दिलाने के लिये यज्ञोपवीत का तीसरा सूत्र हमें समाज के महान व्यक्यिों द्वारा हम पर किये गये उपकार को याद दिलाता है।

उपनयन संस्कार को इस लिए "उपनयन" कहते है क्योंकि उप का अर्थ है समीप- नयन का अर्थ है, ले जाना। प्राचीन काल में जब माता-पिता अपने पुत्र-पुत्रियों को गुरुकुल में भरती कराते थे, आचार्य के पास ले जाते थे तो आचार्य उनका पहले उपनयन संस्कार कराता था। जो मतलब आज स्कूल जाने से समझा जाता है, प्राचीन समय में वही उपनयन से माना जाता था। आचार्य शिष्य को अपने मन में स्थान देकर उसे विद्या पढ़ाना शुरु करता था। विद्या, बल और सदाचार, जनेऊ के ये तीन तार इन तीन गुणों की ओर भी संकेत कर रहे है।

यज्ञोपवीत धारण करने वालों का रहन-सहन, बोल-चाल, खान-पीन आदि शुद्ध होना चाहिये। विशेष रूप से मांस-मदिरा से कोसों दूर रहना चाहिये।

यज्ञोपवीत पहनने का मन्त्र

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

पारस्कर गृहसूत्र २.२.११.

यह यज्ञोपवीत-ब्रह्मसूत्र परम पवित्र है। इसे विद्वान् आचार्य के सामने धारण करता करती हूं। दीर्घ आयु देने वाले, आध्यात्मिक उन्नति कराने वाले और पवित्रता के चिन्ह इस यज्ञोपवीत को मैं ग्रहण करता करती हूं। ज्ञान यज्ञ की दीक्षा लेने के लिये मैं इस पवित्र ब्रह्मसूत्र को पहनता पहनती हूं।

इस मन्त्र को बोलकर आचार्य बायें कंधे के ऊपर गले के पास, सिर को बीच में से निकालकर, दाहिने हाथ के नीचे बगल में से निकाल, कटि (कमर) तक धारण कराये। फिर संस्कार विधि में दिये गये इस संस्कार से सम्बन्धित यज्ञ को करें।

(बाकी अगले अंक में।)